# जीवन परिचय

नाम - हेमंत जायसवाल

पिता - स्व: श्री देवप्रकाश जायसवाल

माता - श्रीमती कुंती जायसवाल

बड़े पिता - श्री ओमप्रकाश जायसवाल

ग्राम - जीवल , बाराबंकी

विद्यालय - सद्भावना इंटर कॉलेज जीवल बाराबंकी |

-----जन्म 10/10/2001 वी.ए. मे अध्ययन जारी पिता जी के स्वर्गवास होने के पश्चात जीवन की जटिल समस्याओ से लड़ते हुए इस जीवन से सीखने का प्रयास जारी है |

# जीवन परिचय

# समर्पण

इस पुस्तक मे मैंने जो अपने जीवन व माता पिता के संस्कारों से व समाज की संप्रभुता व राष्ट्र की अखंडता से जो सीखा वही ज्ञान मैं अपने विचारों के माध्यम से इस पुस्तक को समाज व राष्ट्र व अपने माता पिता को समर्पित करने का प्रयास किया हूँ | मैंने अपने जीवन मे जो सीखा एवं जो कुछ भी अनुभव किया व देखा उसे विचारों के माध्यम से इस पुस्तक मे दर्शाता हूँ | और आशा करता हूँ कि यदि आज के युवा समाज इस पुस्तक को पढ़ेगा और इसे अपने जीवन मे अपनाएगा तो उसमे सेवा समर्पण व संकल्प का भाव जगेगा मैंने इस पुस्तक मे पूरे मानव समाज को एक सूत्र में बढ़ने का प्रयास किया है |यदि आज का युवा समाज इस पुस्तक की और एक भी कदम बढ़ेगा तो मैं उसका आभारी रहूँगा |

1- एक सच्चे प्रेमी को अपना सच्चा प्रेम पाने के लिए समाज से लड़ जाना चाहिए |

2- मनुष्य को श्रेष्ठ व्यक्ति बनने के लिए स्वयं से लड़ना चाहिए |

3- एक वीर व्यक्ति को अपनी वीरता का प्रदर्शन करने के लिए एक वीर व्यक्ति से लड़ना चाहिए |

# जीवन परिचय

4- जो व्यक्ति समय के साथ पंजे से पंजा मिलाना सीख लेता है | उस व्यक्ति को जीवन के रण में कोई नहीं हरा सकता |

5- जो व्यक्ति समय की रण को छोड़ भागा उसे ईश्वर भी नहीं जिता सकता क्योंकि वह समय रूपी रण ईश्वर ही  है जो तुम्हें संघर्षों से लड़ने की छमता प्रदान करने आया है |

6- माता पिता तथा गुरु के लिए ईश्वर से लड़ जाना चाहिए स्वयं के मान सम्मान तथा स्वाभिमान के लिए काल से लड़ जाना चाहिए |

7- प्रेरणाओं के बिना मानव हर लक्ष्य से अधूरा होता है |

8- समय के अनुसार सम्बन्धों की परिभाषाएं बदला करती हैं |

9- अभ्यास ही जीवन में सफलताओं की सर्वश्रेष्ठ सीढ़ी है |

10- निराशा का उत्तर असफलता हो सकता है,किन्तु असफलता का उत्तर निराशा न होना चाहिए |

11- ईश्वर की आराधना सर्वोपरि है |

12- जीवन जीने की आकांक्षा रखो किन्तु जीवन से मोह न करो |

# जीवन परिचय

13- जो व्यक्ति बड़ों का सम्मान नहीं करते उनका सम्मान तो ईश्वर भी नहीं करता क्योंकि सम्मान मे ही ईश्वर वास करता है |

14- मैं मानव हूँ मानवता मेरा धर्म है | लोगों कि सेवा करना हमारा कर्तव्य है एकता हमारी परिभाषा है |

15- जिस व्यक्ति मे आत्मविश्वास की कमी होती है वह व्यक्ति लक्ष्य की प्राप्ति कभी नहीं कर सकता है |

16- अधिकार की लड़ाई मे व्यक्ति के व्यक्तित्व का सही परिचय होता है |

17- जितनी मधुरता और स्नेह भावनात्मक संबंधों मे होती है ,उतनी मधुरता उतना स्नेह किसी और संबंध मे नहीं हाती है |

18- समय आने पर संबंध का पता चलता है, संबंधों के जुड़ने से समय का पता चलता है |

19- हिन्दी भाषा कि आभा उस निर्मल जल के समान है जिसमे यदि व्यक्ति स्नान कर ले तो उसके सौन्दर्य चरित्र का निर्माण होगा |

20- जिन लोगों के बीच या समाज अथवा देश में ईर्ष्या जन्म लेकर पलकर बढ़ रही है उन लोगों या उस समाज का अथवा उस देश का विकास ईश्वर भी नहीं कर सकता |

# जीवन परिचय

21- ईश्वर के लिए स्वयं से लड़कर स्वयं मे विजयी होकर अग्रसमर्पण की भावना से अपना मान सम्मान एवं स्वाभिमान और प्रेम तथा कर्म और अपने जीवन का सर्वस्व समर्पित कर देना उस मानव के जीवन की सच्ची विजय होती है |

22- व्यक्ति आयु में कितना भी बड़ा हो जाए किन्तु उसके कर्म जिस अवस्था को दर्शाते है उसमे उसी अवस्था की आभा झलक करती है |

23- धैर्यवान से बड़ा विजेता और कोई नहीं होता है |

24- ज्ञान वह शीतल दर्पण के समान है जिसमे व्यक्ति अपने भविष्य को देख सकता है अर्थात पढ़ सकता है और ज्ञान के माध्यम से एक सुंदर से भविष्य का निर्माण कर सकता है |

25- हमारे द्वारा किए गए प्रत्येक कर्म से हमारे अंदर अनेक कलाएं जन्म लेती है प्रत्येक अच्छी कला हमे नैतिकता का पाठ सिखाती है |

26- जो कर्म परिणाम की दृष्टिकोण से गर्व से किया जाए वही कर्म अभियान का रूप ले लेता है |

27- जो कर्म विश्वास की दृष्टि से कर्तव्य समझकर किया जाए वही कर्म स्वाभिमान का रूप ले लेता है |

28- व्यक्ति के व्यक्तित्व का सारा परिचय उसके चरित्र मे छिपा होता है |

# जीवन परिचय

29- पिता पुत्र के बीच कर्तव्यों की एक अलौकिक डोर होती है |

30- व्यक्ति के चुनाव करने कि प्रक्रिया बताती है कि उसका अनुभव कितने उच्च कोटि का है |

31- ईश्वर से हमे फल नहीं फल को सिद्ध करने की छमता माँगनी चाहिए |

32- व्यक्ति की पूंजी वह नहीं जो उसके पास संपत्ति के रूप मे उपस्थित है क्योंकि पूंजी परिस्थितियों के अनुकूल या प्रतिकूल होने पर आया जाया करती है |पूंजी तो वह है जो अपने कर्मों के द्वारा कमाई जाती है जिनका निर्धारण समय व परिस्थितियाँ करती है जो उसे फल के रूप मे भविष्य मे मिलता है |

33- जीवन की हर कठिनाई व संघर्ष पीछे छिपा आशा व विश्वास ही सफलता का दूसरा स्वरूप है |

34- व्यक्ति के द्वारा सच्ची निष्ठा व ईमानदारी से किया गया कर्म ही व्यक्ति के जीवन की श्रेष्ठ पूजा होती है |

35- व्यक्ति अपने जीवन में जितना किसी चीज के न होने का महत्व देता है उतना होने वाला का नहीं संतोष न प्राप्त होने का कारण यही है |

36- स्वयं की इच्छा व समर्पण की भावना से दिया गया दान ही शुद्ध दान होता है |

# जीवन परिचय

37- दूसरों को बुरा भला कहने से पहले अपने आप को भी उन परिस्थितियों मे रख कर देखना चाहिए फिर कहना चाहिए |

38- व्यक्ति के अटूट संकल्प मे ही उसके विजय का आधार होता है |

39- जिस चीज की सीमितता नहीं रहती उसका विनाश निश्चित है |

40- किसी व्यक्ति की सम्बन्धों की मधुरता उसकी भावनाओं पर निर्भर करती है व्यक्ति जैसी भावना वैसी मधुरता सम्बन्धों मे रहती है |

41- परिश्रम तो सब करते है किन्तु परिस्थितियों का सामना विवेकशील व धैर्यवान व्यक्ति ही कर पाता है |

42- संयम ही व्यक्ति के जीवन को निखारता है मर्यादा व्यक्ति के व्यक्तित्व को सही मार्गदर्शन प्रदान करती है |

43- व्यक्ति को जीवन मे मिली प्रत्येक सीख अनुभव संचित करती है और वही अनुभव भविष्य मे सफलता को प्राप्त करने मे सहायक होती है |

44- मनुष्य त्याग और तप के बिना  अपने जीवन मे किसी भी लक्ष्य को सिद्ध नहीं कर सकता |

# जीवन परिचय

45- भविष्य को देखते हुए यदि वर्तमान मे कोई काम किया जाए तो वह काम सही समय पर पूर्ण होता है |

46- किसी भी व्यक्ति को स्वयं को छोटा न समझना चाहिए क्योंकि छोटा समझने से छोटे छोटे ही विचार जन्म लेते है और छोटे छोटे विचार जन्म लेने से उसके स्वाभिमान का कद छोटा हो जाता है जिसके कारण उसका मनोबल भी छोटा हो जाता है जिससे उसके कार्य करने कि छमता स्वयं ही छोटा रूप धारण कर लेती है |

47- प्रेम तो वह समर्पण की भावना है जिसमे समर्पित करने वाले के द्वारा समर्पित करने वाला को भी अपनी भावना मे मिला ले अर्थात जीवन के किसी भी दृष्टि से ऊँच नीच का भेद भाव न रह जाए अर्थात भक्त मे भगवान और भगवान मे भक्त नजर आए वही तो प्रेम है | जैसे श्री राम मे श्री हनुमान और हनुमान मे श्री राम |

48- जिस व्यक्ति की मन की भावनाये स्वच्छ व निर्मल होती है वह स्वयं मे एक संत होता है उसके ह्रदय मे स्वयं ही ईश्वर वास करता है उसे त्याग और तप की आवश्यकता नहीं होती ईश्वर को पाने की |

49- जिस व्यक्ति मे स्वाभिमान मर जाता है उसके जीवन मे कुछ अवशेष बचता ही नहीं क्योंकि स्वाभिमान उसी पर किया

जाता है जिस पर विश्वास हो और विश्वास आत्मबल का दूसरा रूप है |

50- जो व्यक्ति अधिकार की लड़ाई नहीं करते उनसे बड़ा निर्बल कोई और नहीं होता है क्योंकि अधिकार की लड़ाई व्यक्ति के सम्मान तथा स्वाभिमान की लड़ाई होती है क्योंकि सम्मान व्यक्ति का सब कुछ होता है सम्मान बिना मानव निर्लज्ज होता है |

51- तप से व्यक्ति का जीवन होता है प्रेम से व्यक्ति को उसके अस्तित्व का ज्ञान तथा त्याग व्यक्ति को जीवन मे संघर्षों से लड़ने की छमता प्रदान करता है और जो इन तीनों सिद्धांतों के अस्तित्व को समझ कर उन पर अमल कर ले उससे तो युद्ध मे लड़ने मे एक बार देवता भी विचलित हो जाते है जैसे शंखचूर तथा तुलसी का त्याग तप और प्रेम |

52- जिसकी आभा अनेकों लोगों को प्रकाशित करती है , अर्थात उसकी आभा मे आने से अनेकों लोगों के जीवन से अंधकार चला जाए उसके जीवन मे प्रकाश ही प्रकाश हो जाए अर्थात उसके जीवन मे सुप्रभात हो जाए वही प्रकाश होता है चाहे वह प्रातः काल का समय हो या गुरु की शरण या एक सच्चे मित्र का साथ |

53- जो सदा से चल आया तथा सदा रहेगा वही सत्य है और सत्य ही ईश्वर |

# जीवन परिचय

54- जो व्यक्ति स्वयं मे प्रसन्न रहता है उसे दुख का आभास नहीं होता किन्तु जो व्यक्ति स्वयं मे निराश होता है उसके जीवन मे सुख आकर भी उसे सुख प्रदान नहीं कर सकता |

55- . जिंस व्यक्ति में अंतः चेतना सोई हुई हो यदि बाहर के करोड़ों सूर्य भी एक साथ मिलकर प्रकाश करें तो भी उसके जीवन में प्रकाश नहीं ला सकते जब तक वह स्वयं अपने अंतः चेतना को प्रकाशित नहीं करेगा।

56- . जिंस प्रेम में एक दूसरे के प्रति त्याग की भावना न हो वह प्रेम सच्चा प्रेम नहीं होता।

57- . जो सदा से चला आया तथा सदा रहेगा वही सत्य है और सत्य ही ईश्वर।

58- . यदि किसी व्यक्ति में थोड़ा भी साहस व विश्वास शेष है लड़ने का तो मृत्यु भी उसके पास पहुँचकर अपना मार्ग परिवर्तित कर लेती है।

59- महाकाल की कृपा हो जिस पर महाप्रभु का साथ उसे कौन हराएगा रण में जिसका समय दे साथ।

60- मनुष्य जब जब मर्यादाओं की सीमा का उल्लंघन करेगा तब तब उसका विनाश होगा।

61- एक मानव के लिए उसके सम्मान से बढ़कर कुछ और हो ही नहीं सकता है।

# जीवन परिचय

62- परिस्थितियां व्यक्ति के समय का समूह अर्थात उसके जीवन एवं उसकी विचारधारा व उसके व्यवहार से ही परिस्थितियों का जन्म होता है जो व्यक्ति की सोच से ही पैदा होती है फिर भी उसकी सोच से परे होती है।

63- आशा व विश्वास धैर्य का ही दूसरा रूप है |

64- जीवन एक संघर्ष रूपी परीक्षा है संघर्ष उसी के जीवन में आता है जो उस संघर्ष से निपटने का सामर्थ्य रखता हो जिसने संघर्ष से सामना नहीं किया वह जीवन की दृष्टिकोण से बड़ा अभागा होता है एवं जीवन की दृष्टिकोण से परीक्षा में फेल हो क्योंकि जीवन उसे संघर्ष रूपी परीक्षा पार करने के योग्य नहीं समझती क्योंकि परीक्षा उन्हीं की होगी जो पढ़ने व सीखने जाते हैं उनकी नहीं जो पढ़ने नहीं जाते।

65- प्रत्येक वह कर्म जिसका दृष्टिकोण अच्छा है। वह कर्म ईश्वर की आराधना के समतुल्य है।

66- व्यक्ति की एकाग्रता उसकी सबसे बड़ी जीत है।

67- पिता पुत्र एवं गुरु एक दूसरे के प्रति यदि स्वार्थ की दृष्टि से कर्तव्यों का निर्वाहन करें तो वहाँ संबंध का अस्तित्व नहीं रह जाता।

68- व्यक्ति की वीरता उसके बल पर ही नहीं, उसकी बुध्दि पर कही अधिक निर्भर करती है, क्योंकि बल हाथी व शेर में भी होता है। किंतु इस पृथ्वी पर राज़ मनुष्य ने ही किया। इसलिए बुध्दि का बल शारीरिक बल से श्रेष्ठ होता है।

# जीवन परिचय

69- सीखने व सिखाने की प्रक्रिया को जीवन कहते हैं।

70- जिस व्यक्ति मे विपरीत परिस्थितियों मे भी बिना विवेक खोए धैर्य के साथ सही निर्णय लेने का सामर्थ्य होता है वही मनुष्य धीर वीर होता है |

71- जो बातें व्यक्ति के जीवन में सीख का केंद्र। बने वही बात व्यक्ति के लिए सर्वोत्तम है। इन्हीं बातों पर व्यक्ति अमल करके अपने जीवन को उत्तम बना सकता है।

72- इस समाज को पड़ना बहुत ही मुश्किल है क्योंकि इस समाज मे अनेकों विचार वाले व्यक्ति रहते हैं। परंतु इस समाज में मिलने वाले प्रतिष्ठावों को यदि पढ़ लिया तो समाज को पढ लिया यदि इस समाज से मिलने वाली प्रतिष्ठावों को नहीं पड़ पाए। फिर चाहे सौ वर्ष ही क्यों न आप इस समाज से जीवित रहो, आप समाज को नहीं पढ़ पाए|

73- आत्मविश्वास व्यक्ति का सबसे बड़ा खजाना है।

74- प्रत्येक व्यक्ति का मान सम्मान तथा स्वाभिमान उस वक्त की आत्मा होती है। ठीक वैसे ही धरमनिष्ठ राजा का न्याय ही उसकी आत्मा होती है।

75- जो अब व्यक्ति प्रत्येक वस्तुओं का सदुपयोग करते हैं। वह व्यक्ति समय के प्रत्येक दृष्टिकोण में उचित व्यक्ति हैं।

76- जिस दिन मानव को यह ज्ञान हो जाएगा। मैं क्या हूँ, मेरा दायित्व तो क्या है? वह क्षण वह दिन उनके लिए

श्रेष्ठतम होगा। फिर वह किसी पथ से विचलित नहीं होगा। वह अपना लक्ष्य सरलता से प्राप्त कर सकेगा। और कोई भी पथ उसे। शा। श्लेशमात्र भी विचलित नहीं कर सकेगा।

77- भूतकाल साक्ष्य होता है। वर्तमान व्यक्ति का कर्म तथा भविष्य कर्म का परिणाम यदि तीनों भूतकाल, वर्तमान और भविष्य इन तीनों को कोई एक नाम दिया जा सके तो वह समय है। इसीलिए व्यक्ति को आत्महत्या नहीं करनी चाहिए क्योंकि पता नहीं संघर्ष रूपी समय किसी के जीवन से कैसा इतिहास लिखें? जो? आने वाले भविष्य में व्यक्तियों के लिए मार्गदर्शन का कारण बने। अतः आत्महत्या करने वाला बड़ा कायर होता है।

78- निम्न कोट के व्यक्तियों को अपनी प्रशंसा सुनना बहुत अच्छा लगता है।

79- सोच ही व्यक्ति का सबसे बड़ा स्वाद है क्योंकि व्यक्ति की सोच को जो प्रिय है उसका स्वाद कैसा भी हो उसे अच्छा ही लगेगा। इसलिए व्यक्ति की सोच ही सबसे बड़ा स्वाद है।

80- कल करना अर्थात एक और नई समस्या को जन्म देना या समस्या को बड़ा करना।

81- शिक्षा ही सुधार है।

82- व्यक्ति के व्यक्तित्व उनका सारा परिचय उसके चरित्र में छिपा होता है।

83- स्वास्थ्य ही व्यक्ति का सबसे सुंदर आभूषण है।

84- प्रयास करते रहना भी एक जीत है।

# जीवन परिचय

85- जो व्यक्ति प्रयास करना छोड़ देते हैं, उनका जीवन निराशाओं से घिर जाता है?

86- त्याग व्यक्ति के जीवन में निखार लाता है।

87- किसी भी क्रम को सच्ची लगन तन्ययता और सच्ची आस्था से किया गया कर्म ही उस व्यक्ति के जीवन को सच्ची प्रार्थना होती है।

88- व्यक्ति के अंदर ब्रह्मत्व व छत्रित्व का भाव, उसकी सुंदर विचारधारा व उसकी सामर्थ्य से पैदा होती है। न कि छत्रीय कुल व ब्राह्मण कुल में जन्म होने से। व्यक्ति का सुंदर व संयमित, विवेकशील विचारधारा ब्रह्म का भाग है। व्यक्ति का सामर्थ्य अर्थात उसकी क्षमता एवं उसका आत्मविश्वास व आत्मबल उसके छत्रित्व का भाग है।

89- जो व्यक्ति व्यक्ति की विशेषताओ से मित्रता न करके व्यक्ति से मित्रता करते हैं, वो जीवन भर धोखा खाते है और सही व्यक्ति का चुनाव नहीं कर पाते हैं।

90- जिस व्यक्ति का कोई मार्गदर्शन करने वाला नहीं होता है। वह व्यक्ति भविष्य की दृष्टिकोण से अनाथ होता है।

91- ब्यक्ति की सरलता में ही उनके जीवन का मार्गदर्शन छिपा होता है। व्यक्ति के जीवन से संबंधित सारे प्रश्नों का उत्तर उसी के पास होता है किंतु वह संसारिक कामनाओं का त्याग करके ईश्वर में ध्यान करे तो उसे आत्मिक ज्ञान प्राप्त होता है, जिसमें उनके सारे प्रश्नों का उत्तर होता है।

# जीवन परिचय

92- व्यक्ति ही व्यक्ति के सुख दुख का कारण होता है इसलिए स्वयं भी खुश रहें और दूसरों को भी खुश रखें।

93- ज्ञान कि सुंदरता उसके चेतना को विकसित करने मे है|

94- जिसमे समर्पण के भावना की कमी हो वह व्यक्ति ह्रदय का गरीब होता है |

95- जो अच्छे पथ पर नहीं चलते है उन्ही कि आस्था ईश्वर के प्रति सच्ची नहीं होती है और जो पथ पर नहीं चलते वह चाहे जितनी पूजा पाठ कर ले उनके व्यक्तित्व मे ईश्वर के प्रति कोई आस्था नहीं होती है क्योंकि उनकी व्यक्तित्व मे अच्छे कर्म व आदर्श व्यक्तित्व के रूप मे ईश्वर के प्रति कोई समर्पण का कोई भाव नहीं होता है |

96- जो विचार धारा व्यक्ति से उसके विचारों की स्वाभाविक स्वतंत्रता को छीन कर एवं भावनात्मक दृष्टिकोण से मानव से उसकी मानवता छीने एवं एक दूसरे के प्रति समभाव की भावना को समाप्त कर उसे कट्टर बनाए वह विचार धारा रूढ़ी विचारधारा कहलाती है |

97- जिस ज्ञान मे रुढ़िता से मुक्त का भाव न हो वह ज्ञान भी रूढ़ि है |

98- जूब तक समाज मे भावनात्मक दृष्टिकोण से मेत्री भाव को एक दूसरे के ह्रदय मे नहीं पन पाओगे तब तक समाज अहिंसा व एकता एवं भाई चारा के लक्ष्य से कोशों दूर रहेगा |

99- एकता यह प्रमाणित करती है की ईश्वर एक है |

100- स्वार्थ त्याग कर निष्काम भावना से किया गया कर्म कर्तव्य कहलाता है इसलिए माता पिता पुत्र व पुत्री

# जीवन परिचय

गुरु शिष्य व मित्र इनके संबंधों की डोर कर्तव्यों से बंधी होती है इनके बीच संबंधों की दृष्टि से किया गया कर्म कर्तव्य कहलाता है|

101- ना अपेक्षा से अधिक ना अपेक्षा से कम अर्थात सम अवस्था की इसी अवस्था को योग कहते हैं

102- जिंदगी कहने को तो बहुत छोटी है। लेकिन जीने के लिए बड़ी है जीवन कहना तो आसान है। लेकिन निभाना कठिन इसीलिए जिसको वादा करने वाला नहीं निभाने वाला साथी मिल जाए, उसका जीवन सुखमय हो जाता है।

103- जिंस व्यक्ति की भावनाओं में ऊंच नीच का भेद भाव होता है। उसकी पूजा को ईश्वर कभी नहीं स्वीकार करता है।

104- जिस प्रेम में एक दूसरे के प्रति त्याग की भावना न हो, वह प्रेम प्रेम नहीं होता।

105- हठ हो तो ध्रुव जैसा आस्था हो तो प्रहलाद जैसी दानवीर हो तो कर्ण जैसा आदर्शवान हो तो श्रीराम जैसा सत्यवादी हो तो हरीशचंद्र जैसा शिष्य हो तो एकलव्य जैसा सम्राट हो तो विक्रमादित्य जैसा और पुत्र हो तो श्रवण कुमार जैसा।

106- आत्मविश्वास व्यक्ति का सबसे बड़ा खजाना है |

107- जो स्वयं की सोच से जागा वही आगे चलकर सभी के लिए प्रेरणा स्रोत बनता है|

# जीवन परिचय

108- आकर्षण सत्य पर पड़ी एक पट्टी के समान होता है|

109- रूढ़ि वादिता की भावना से मुक्त ज्ञान ही सर्वोपरि ज्ञान है|

110- मैत्री भाव से सुंदर कोई भाव नहीं होता है|

111- मानवता से सुंदर कोई परिभाषा नहीं होती है|

112- विवेकरहित निति असफलता का कारण है यदि स्वयं के लिए विवेक अर्थात संयम से नीतियां बनाई जाएं तो किसी भी क्षेत्र में आसानी से सफलता प्राप्त कर सकते हैं|

113- उच्चतम से उच्चतम विचारधारा वाला व्यक्ति जब तक निम्न वर्ग की बातों का ध्यान नहीं देगा तब तक उसकी योग्यता में निखार आ ही नहीं सकता है |

114- यदि विश्वास की दृष्टिकोण और कर्म के प्रति आस्था रखते हुए कर्म किए जाएं वही कर्म संभव हो जाता है अर्थात प्रत्येक कर्म की सफलता की जननी है विश्वास|

115- व्यक्ति का कर्म के प्रति आस्था व्यक्ति के अंदर विश्वास को जन्म देती है|

116- जिस समाज या जिन लोगों के बीच में पद की गरिमा योग्यता के अनुसार न देकर संपत्ति से बेची जाती है उस समाज में शांति और समृद्धि का पतन हो जाता है|

# जीवन परिचय

117- विश्वास की दृष्टिकोण से यदि व्यक्ति कोई भी कर्म करता है तो व्यक्ति के भीतर आस्था का संचार होता है|

118- कर्म के प्रति आस्था रखने वाला व्यक्ति सफलता की सीढ़ियां सरलता से चढ़ जाता है|

119- व्यक्ति की इच्छा स्वप्न के समान होती है जो पूरी न हो तब भी स्वप्न और पूरी होने के बाद भी वह सपना ही रहती है|

120- समाज में कमियां निकालने स्थान पर स्वयं में परिवर्तन की आवश्यकता है जिसदिन व्यक्ति स्वयं में परिवर्तन कर लेगा उस के समाज सुधार का उद्देश्य पूरा होगा|

121- यदि विचार करने की प्रक्रियाओं का स्वरूप अच्छा है तो व्यक्ति का स्वभाव भी अच्छा होगा| जैसा स्वभाव होगा वैसा ही व्यक्ति होगा और वैसा ही समाज का निर्माण होगा|

122- आकांक्षाओ की आंधी में बैठा व्यक्ति कितनी भी संपत्ति क्यों न अर्जित कर लें किंतु उसे शांति व परमानंद की प्राप्ति नहीं हो सकती|

123- एक व्यक्ति के द्वारा दिए गए वाह्य परिचय से लाख गुना अधिक श्रेष्ठ है उसके द्वारा किए गए दूसरों के साथ सभ्य व्यवहार व शिष्टाचार एवं उनके द्वारा किया गया दूसरों का सम्मान में जो परिचय झलकता है वह बाह्य परिचय से लाख गुना उत्तम परिचय होता है|

# जीवन परिचय

124- रूपांतरण ही प्राणी का स्वभाव है|

125- पश्चाताप की भावना मनुष्य को सभी पापों से मुक्त करती है|

126- गंभीरता व्यक्ति को विचार करने के स्वरूप को दर्शाती है|

127- किसी भी व्यक्ति का परिचय उसके व्यवहार में होता है|

128- व्यक्ति के लिए यह आवश्यक नहीं कि वह ज्ञान का कितना भाग पढ़ता है व्यक्ति के लिए यह आवश्यक है उसकी चेतना रूपी बुद्धि प्रकाश रूपी ज्ञान के कितने भाग को स्वयं में अर्जित करके अपनी चेतना रूपी बुद्धि की योग्यता को बढ़ाता है।

129- एक गुरु के लिए शिष्य द्वारा सबसे उत्तम गुरुदक्षिणा यही है की गुरु के द्वारा दिए गए शिष्टाचार व सभ्यता एवं उनके द्वारा दिए गए ज्ञान का अनुसरण करके समाज में विश्वासपात्रता का स्थान प्राप्त करें और लोगों का सम्मान करें।

130- हिंदी संस्कृत भाषा का वह छोटा रूप है। जिसकी आभा मानव के सदकर्म पर अपना प्रकाश डालकर मानव को उस चमकते हुए हीरे के समान बनाता है जिसके द्वारा एक मानव दूसरे मानव के जीवन को सरल बना सकता हैं या बदल सकता है हिंदी में वह दिव्य तेज है।

131- गंभीरता व्यक्ति के मुखार बिन्दु पर मन की भावनाओं की आभा बिखेरा करती है।

# जीवन परिचय

132- एक अच्छे व्यक्ति को अपना परिचय बताने की जरूरत नहीं, उसका अच्छा व्यवहार ही परिचय के लिए पूर्ण होता है |

133- व्यक्ति के जीवन का संघर्ष एवं विशेषता ------ व्यक्ति का जीवन वास्तव में अंधकारमय होता है। व्यक्ति वह दीपक होता है। जिसे तपकर अर्थात जल कर अपने जीवन में प्रकाश करना होता है। तुम ही वह प्रकाश हो मानव जिसे अपने अंधकार रूपी जीवन में प्रकाश लाना है। मानव का जीवन ठीक उसी प्रकार का होता है जैसे एक मोमबत्ती का धागा। यूं समझ लो एक घर का जिम्मेदार नागरिक हैं। जो स्वयं को तपाकर अपने परिवार के लिए भोजन अर्जित करता है, उसका परिवार यूं समझ लो जो उस धागे का मोम है। जो धागे के जलने पर मोम पिघलकर अश्रु बहाते हैं। किंतु जिस दिन वह धागा जलना बंद हो जाता है अर्थात वह जिम्मेदार व्यक्ति काम आना बंद कर देता है। या असहाय हो जाता है तो उसी का परिवार जो मोम की भांति उसके लिए अश्रु बहाता था। वही परिवार उसके लिए अश्रु बहाना बंद कर देता है एवं उसके प्रति उसका सम्मान परिवार के लोगों में धीरे धीरे समाप्त हो जाता है। फिर उसकी विवशता का लोग नजारा देखते हैं। फिर वही परिवार जिसका भरण पोषण करता था भावनात्मक दृष्टिकोण स्नेह से उसे वंचित कर देता है। फिर समय और समाज उसका उपहास करता है। जैसा कि मोम का धागा जलना बंद हो जाए अर्थात

तपना बंद हो जाए तो वही मोम जो उसके जलने पर उसके लिए पिघलकर अश्रु बहाता था। वहीं मोम उसके लिए कठोर हो जाता है। अपने परिवार के प्रति एक जिम्मेदार व्यक्ति का जीवन ठीक इसी प्रकार ही होता है।

134- जो व्यक्ति अपने भाग्य से आशा करता है और भाग्य के सहारे जीता है। वह अपने भाग्य को ही कोसता है। वह व्यक्ति अपने जीवन में कभी भी सफलता एवं सुख को प्राप्त नहीं कर सकता है। उसे सुख एवं समृद्धि पाने की आशा भी नहीं करनी चाहिए क्योंकि वह व्यक्ति कर्म से जी चुराता है और अपने भाग्य में अपने जीवन के सिद्धांतों को खोजता है और कर्म से भागता हैं। ठीक उसी प्रकार उसके जीवन से सुख व समृद्धि भी दूर भागती है।

135- व्यक्ति का दृढ़ निश्चय, सच्ची लग्न एवं अटल विश्वास मानव को जीवन के संघर्षों से लड़ने की क्षमता को बढ़ाता है और जीवन के संघर्षों से लड़कर लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कितनी ऊंचाइयों तक जा सकता है यह उसका दृढ़ निश्चय बताता है।

136- यदि आप स्वयं की नजरों में सम्मान के पात्र होंगे तभी सभी को सम्मान का पात्र समझेंगे।

137- समझदार व्यक्ति किसी भी बात को अपने विवेक की कसौटी पर परखकर विश्वास करता और मूर्ख व्यक्ति किसी के द्वारा कही गई बातों को उसी की भाषा में ग्रहण कर लेता है। बिना अपने विवेक की कसौटी पर

# जीवन परिचय

परखे बिना समझदार व्यक्ति मे स्वयं की समझ होती है। और मूर्ख मे दूसरों की।

138- जीवन देखने के बजाय परखना सीखो तभी सही चीजों का अनुभव होगा।

139- जो व्यक्ति स्वयं पर अनुशासन नहीं कर सकता, वह व्यक्ति किसी भी क्षेत्र में शासन नहीं कर सकता है।

140- व्यक्ति की रुचि से उसकी समझदारी का पता चलता है।

141- प्रयत्नशील से बड़ा कोई प्रयास नहीं है

142- यदि किसी व्यक्ति का चरित्र किसी व्यक्ति के जीवन का आदर्श बनकर उसमें संस्कारों को जन्म दे तो वह उसके लिए जीवन के दृष्टिकोण से पित्र समान है।

143- पूरा संसार भावनात्मक दृष्टिकोण से एक दूसरे से बंधा है। बस उसे शारीरिक आकर्षण व संबंधों के मोह से ऊपर उठकर देखो सब एक सामान।

144- किसी भी सम्बन्ध में चाहें वह संबंध कितना भी गहरा क्यों ना हो लेकिन यदि उसमें मैत्री का भाव नहीं है तो वह संबंध स्वतंत्र रूप से पूर्ण विकसित नहीं होगा।

145- सोच ही व्यक्ति की शक्ति व कमजोरी भी है इसीलिए संतुलन आवश्यक है।

146- व्यक्ति का शरीर नहीं बल्कि उसकी सोच ही बिमारी व शक्ति भी है, लेकिन उपयोग के अनुसार।

# जीवन परिचय

147- मानव वह मानवता के आधार पर ही पूरे मानव समाज को एकसूत्र में बांधा जा सकता है न कि हिंदू न हीं सिख, ना ही मुस्लिम, न ईसाई।

148- हार जाना हार की निशानी नहीं बल्कि हार मान लेना हार की निशानी है।

149- अपने जीवन से हार मानव जीवन का सबसे बड़ी हार होती है।

150- यह जीवन एक खेती ही तो है। इसमें चाहे अनाज बो या कर्म जैसा बोओगे वैसा ही काटोगे।

151- यदि आप स्वयं की नजरों में सम्मान के पात्र होंगे तभी तो दूसरों को भी सम्मान के पात्र समझेंगे।

152- समर्पण से बड़ी कोई पूंजी नहीं होती।

153- जहाँ समर्पण नहीं होता, वहाँ आस्था भी नहीं होती है।

154- जैसे संस्कार बोएँगे वैसे ही संस्कार जन्म लेंगे। इसलिए अच्छे संस्कार बोये ताकि अच्छे व्यक्ति का जन्म हो और अच्छे व्यक्तित्व का निर्माण करें।

155- यदि स्वयं मे संतुष्ट नहीं हुए तो बाहर के सारे प्रयास व्यर्थ है।

156- जो स्वयं की सोच से जागा वही आगे चलकर सभी के लिए प्रेरणा स्रोत बनता है।

157- आकर्षण सत्य पर पड़ी एक पट्टी के समान होता है।

158- आशा व विश्वास से सकारात्मक सोच का जन्म होता है एवं सकारात्मक सोच से सकारात्मक ऊर्जा व

# जीवन परिचय

सकारात्मक ऊर्जा से आपके मन व मस्तिष्क मे उठ रहे भावों व भावों के रूप मे उठती है उन्हे शांत कर सकारात्मक जीवन को जन्म देती है |

159- चोरी मानव को विवश तथा असहाय बनाता है न संघर्षों से लड़ने की छमता प्रदान करता है |

160- मानव जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि अपने अंदर छिपी जितनी भी बुराइयाँ है उनका आत्म निरीक्षण करके तथा अच्छी बातों पर अम्ल करना मानव की सबसे बड़ी उपलब्धि है |

161- जब तक बालक के अंदर न समझ का भाव रहता है वह बालक तभी तक बालक रहता है जा उसमे स्वयं के द्वारा विचार करने की छमता जनन कर ले वह बालक नहीं रह जाता है |

162- शरीर नहीं अपना व्यक्तित्व सुंदर बनाएं तभी सुंदर समाज का निर्माण होगा।

163- जो धैर्य से टूटा, वह कभी नहीं जीता।

164- सेवा वहाँ करनी चाहिए जहाँ समर्पण का भाव हो वहाँ नहीं जहाँ समर्पण का भाव नहीं। वहाँ सेवा का कोई अर्थ नहीं होता है।

165- व्यक्ति सोच से नहीं। बल्कि समर्पण के भाव से बड़ा होता है।

166- संभावनाएँ जीवन में मार्ग के समान होती है जो कभी समाप्त नहीं होती है।

167- जब तक व्यक्ति में प्रयास जीवित। है, तभी तक उसमें जीवन जीवित है।

# जीवन परिचय

168- सच्ची निष्ठा ही सर्वोपरि समर्पण है।

169- अभ्यास ही व्यक्ति को पूर्ण विकसित करता है।

170- स्वयं को जाना तो जीवन को जाना।

171- कर्मों के प्रति व्यक्ति की ईमानदारी ही शुद्ध मेहनत है।

172- व्यक्ति मे आशा व विश्वास से उसमें सकारात्मक सोच का जनन होता है और सकारात्मक सोच से सकारात्मक ऊर्जा का जन्म होता है। और सकारात्मक ऊर्जा से व्यक्ति के मन व मस्तिसक में उठ रहे भावों के रूप मे नकारात्मक तरंगे जो विचारों व भावों के रूप मे उठती है उन्हे शांत कर सकारात्मक जीवन देता है |

173- यदि तुमने अपनी एकाग्रता को साध लिया तो प्राणों को भी साध लिया।

174- व्यक्ति मे त्याग व संघर्ष व्यक्ति की अंदरूनी शक्तिको परिपक्व बनाता है।

175- जब तक व्यक्ति स्वीकारकरना नहीं सीख लेता है तब तक वह समझदार नहीं बन सकता है।

176- किसी भी वस्तु के प्रति आपकी सकारात्मक सोच आप में उस वस्तु के प्रति सकारात्मक ऊर्जा को महसूस कराती है और वस्तु के प्रति नकारात्मक सोच आपको उस वस्तु के प्रति नकारात्मक ऊर्जा को महसूस कराती है।

177- आशा व निराशा से गढ़ी जीवन शीढ़ी को ही तों संघर्ष कहते हैं।

178- किसी भी वस्तु से अत्यधिक लगाव व्यक्ति की जीवन शांति को भंग कर देता है।

# जीवन परिचय

179- मानव व मानवता के आधार पर ही पूरे मानव समाज को एकसूत्र में बांधा जा सकता है ना की हिंदू व मुस्लिम, सिख, ईसाई के आधार पर।

180- हार जाना हार की निशानी नहीं बल्कि हार मान लेना हार की निशानी है।

181- अपने जीवन से हार मानव जीवन की सबसे बड़ी हार है।

182- सपने देखना छोड़ अपने विश्वास व धैर्य को मजबूत करें तभी जीत होगी।

183- किसी की बुराई करना आपके बुरे विचार का प्रतीक है।

184- त्याग की आहुतियों से एकाग्रता का निर्माण होता है।

185- किसी वस्तु के प्रति स्वीकृति व श्रद्धा का भाव उस वस्तु को प्रसाद का रूप दे देता है।

186- सोच में सुधार होना कर्मों के प्रति पश्चाताप का भाव जगना।

187- जहाँ सम्यक वाणी सम्यक कर्म सम्यक भाव होता है वही भाग्योदय रहता है। वही शुभ व लाभ का वास होता है।

188- जिसका कर्म य जिंस भावना में एकाग्रता का भाव नहीं होता, वहाँ शुद्धता नहीं होती है।

189- यदि व्यक्ति में स्वीकृति का भाव नहीं है, तो वह समझदारी के क्षेत्र से बाहर है।

190- यदि आपका जीवन आपके सोच के अनुसार हो तो आप जिम्मेदारी में। बंधकर भी स्वतंत्र है।

191- आत्म मुक्ति के लिए किया गया प्रयास ही जीवन प्रयास है।

# <u>जीवन परिचय</u>

192- ईमानदारी से किया गया कर्तव्य का निर्वाहन भी जीव मुक्ति का प्रयास है।

193-

194- ईश्वर आत्मबोध व आत्म मुक्ति के लिए होता है न कि धन व ऐश्वर्य प्राप्ति के लिए उसके लिए उसने तो व्यक्ति को बल व बुद्धि दिया है , उसे प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं वो तो है ही व्यक्ति के पास प्रयास करना है तो ईश्वर को आत्म मुक्ति के लिए करो और यह प्रयास नहीं किया तो क्या किया जीवन मे व्यक्ति के पास धन व ऐश्वर्य, बुद्धि व बल के रूप में तो उपस्थित हैं।

195- परिश्रम से निरंतर संघर्ष व्यक्ति के त्याग व संकल्प शक्ति में वृद्धि करता है।

196- आध्यात्मिक अभ्यास ही संस्कारों की पूंजी है।

197- मनुष्य को मनुष्य बने रहने के लिए आध्यात्मिक अभ्यास आवश्यक है।

198- संबंधों में जीतने के लिए हारना आवश्यक है तभी जीत है।

199- यदि व्यक्ति को जीवन में प्रयास करना नहीं आता तो उसको जीवन में कुछ नहीं आता।

200- जितना मन के संदेह को जगह दोगे, उतना ही आपका विश्वास स्तर गिर जाएगा और आप स्वयं को उतना ही कमजोर महसूस करेंगे।

201- यदि व्यक्ति के दिये सम्मान में समर्पण का भाव नहीं है तो उसका दिया सम्मान किसी भी काम का नहीं है।

# जीवन परिचय

202- वह शिक्षा किसी काम की नहीं जो व्यक्ति मेँ संयम को जन्म ना दे।

203- जब व्यक्ति के व्यक्तित्व का स्तर गिर जाता है तो उसमें समझदारी का स्तर भी कमजोर हो जाता है।

204- जीवन को बिताने के बजाय उसे जीना सीखें।

205- यदि व्यक्ति असफल होने से पश्चात निराश हो जाता है तो उसमें धैर्य धारण करने की क्षमता नहीं अर्थात सही समय की प्रतीक्षा करने का साहस नहीं है।

206- आज का समाज उस राम को पूजता है जो सिर्फ पूजा में रहता है, उस राम को नहीं जो श्रीराम को जन्म भी देता है।

207- धैर्य से व्यक्ति की एकाग्रता मजबूत होती है एवं एकाग्रता से सही समय एवं सही अवसर का ज्ञान होता है।

208- परिस्थिति से टूटना नहीं बल्कि सीखना|

209- आदत सुधार बराबर जीवन सुधार।

210- यदि व्यक्ति में संकल्प शक्ति का अभाव है तो वह जिम्मेदारियों का बोझ नहीं उठा सकता

211- व्यक्ति में धैर्य का होना, अर्थात सही समय, सही अवसर का ज्ञान होना।

212- व्यक्ति बराबर जीवन नहीं बल्कि व्यक्ति के अस्तित्व बराबर जीवन उसका अच्छा व्यक्तित्व, बराबर अस्तित्व एवं अस्तित्व बराबर जीवन इसलिए अपना विश्वास बनाए रखें।

213- यदि व्यक्ति आदत से मजबूर है तो उसमें संकल्प शक्ति का अभाव है।

214- धैर्य बराबर सब्र नहीं बल्कि सही अवसर एवं सही समय का ज्ञान होना।

# जीवन परिचय

215- यदि तुम व्यक्ति में व्यक्ति। को देखते हैं तो। ही तुम व्यक्ति हो, यदि नहीं, तो तुम भी व्यक्ति नहीं हो।

216- अच्छे व्यक्तित्व का प्रदर्शन व्यक्ति में अच्छे व्यक्ति को जन्म देता है एवं बुरे व्यक्तित्व का प्रदर्शन व्यक्ति में बुरे व्यक्ति को जन्म देता है।

217- छोटी छोटी आदतों से जीवन का बहुमूल्य रत्नकोष है ना ही बड़ी सैद्धांतिक बातों का इसलिए आदतों में सुधार करें जीवन स्वर्णिम हो जायेगा।

218- ना पूरी हुई जीवन की इच्छा, न पहुंचे जीवन का केंद्र हम तो लड़ लड़ के थक गए फिर भी लड़े रहे न चैन |

219- जो बनाए रखे वहीं विश्वास है।

220- निराशाओं से टूटा व्यक्ति यदि फिर भी आश लगाकर लड़े तो वह व्यक्ति जीवन के प्रति बहुत जिम्मेदार हो जाता है।

221- व्यक्ति के जीवन में विश्वास नामक एक छन्नी होती है जिससे सभी कर्मों का छारिणीकरण होता है छारिणीकरण होने के बाद उन कर्मों में जितनी सुद्धता बचती है उस व्यक्ति की छवि उतनी ही विकसित होती है। समाज में।

222- यदि तुम व्यक्ति में व्यक्ति को देखते हो तो ही तुम व्यक्ति हो। और यदि नहीं, तो तुम भी व्यक्ति नहीं हो।

223- समर्पण से बड़ी कोई पूंजी नहीं।

224- जो व्यक्ति परिस्थितियों के अनुसार निर्णय लेगा, वही व्यक्ति सफल होगा।

225- जहाँ समर्पण नहीं वहाँ आस्था भी नहीं होता है।

226- सजा ए मौत है यह जिंदगी मौत तो सिर्फ कहने के लिए मौत हैं।

# जीवन परिचय

227- मुझे तो चिंताओं के घेरे ने मारा, जिंदगी के हर पहरे ने मारा। लोग कहते हैं कि रात को बाहर मत निकला करो, मुझे तो जिंदगी के हर सवेरे ने मारा।

228- मोह, माया, आकर्षण, प्रेम के साथ भय का भी जन्म देते हैं।

229- कर्म से हारा मनुष्य निराशा के अंधकार मे डूबा मानव कभी भी सद मार्ग पर नहीं चल सकते हैं।

230- प्रत्येक कर्म से निकली अनेकों महात्वाकांक्षाएं कर्म के सिद्धांत की और अग्रसर करती है।

231- क्रीड़ा सहित एक बालक का युवक ठीक उसी प्रकार होता है जैसे कितना रहित मानव का होता है।

232- जो व्यक्ति दूसरों की विवशता को समझे वह मानव होता है। जो न समझे वह दानव आज के युग मे |

233- व्यक्ति का दृढ़ निश्चय, कर्म के प्रति आस्था और उनका आत्मविश्वास उसका सही मार्गदर्शन करती है अर्थात लक्ष्य की ओर अग्रसर करती है

234- जो कार्य समय पर न हो। व पूर्ण होकर भी अपूर्ण रहता है।

235- अहंकार का विकार व्यक्ति को अंधा कर देता है। जब कोई व्यक्ति अपनी किसी गुणवत्ता अर्थात विशेषता या धन के प्रभाव के कारण अहंकार में डूबकर मानव होते हुए भी मानवता की सीमाओं को लांघकर अपने आप को दूसरों की अपेक्षा स्वयं को श्रेष्ठ समझने लगता है। तो उसके अंदर अहंकार भाव जाग्रत होकर उसके मस्तिष्क पर अपनी पकड़ बनाकर उसे बुरा करने पर विवश कर देता है। फिर वही अहंकार धीरे धीरे मस्तिष्क से

# जीवन परिचय

सोच मे सोच से क्रिया मे आ जाता है फिर एक दिन दूसरे के अपमान का कारण भी बन जाता है। धीरे धीरे फिर एक दिन स्वयं के दुख का कारण भी बन जाता है।

236- समभावनाओं को ढूंढना अर्थात अपनी जीत को ढूंढना|

237- जिंदगी कहने को तो बहुत छोटी है। लेकिन जीने के लिए बड़ी है। कहना तो आसान है। लेकिन निभाना कठिन। इसीलिए जिसको वादा करने वाला नहीं निभाने वाला साथी मिल जाए , उसका जीवन सुखमय हो जाता है।

238- जिंस व्यक्ति की भावनाओं में उंच नीच का भेद भाव होता है। उसकी पूजा को ईश्वर कभी नहीं स्वीकार करता है।

239- जिस प्रेम में एक दूसरे के प्रति त्याग की भावना न हो, वह प्रेम शुद्ध प्रेम नहीं होता।

240- हट हो तो ध्रुव जैसा आस्था हो तो प्रह्लाद जैसी दानवीर हो तो कर्ण जैसा। आदर्शवान हो तो श्रीराम जैसा सत्यवादी हो तो हरीशचंद्र जैसा शिष्य हो तो एकलव्य जैसा सम्राट हो तो विक्रमादित्य जैसा और। पुत्र हो तो श्रवण कुमार जैसा।

241- आत्मविश्वास व्यक्ति का सबसे बड़ा खजाना है |

242- जो कार्य समय पर ना हो वह पूर्ण होकर भी अपूर्ण रहता है

243- असंतोष की भावना व्यक्ति की इच्छाओं को तीव्र कर देती है

244- त्याग संसार की सबसे बड़ी शक्ति है

245- आशा अपने कर्म से करनी चाहिए न कि अपने भाग्य को आशाओं का सिद्धांत मानकर इसके सहारे जीना चाहिए

# जीवन परिचय

246- ईश्वर की आराधना सर्वोपरि है

247- कर्म ही मानव का प्रधान है

248- स्वयं में नम्रता व स्वीकृति की भावना को जन्म दो जिससे आपके जीवन में आने वाली विपरीत परिस्थितियां भी आप के दुख का कारण न बन सके

249- काम क्रोध ईर्ष्या व लोभ एवं अहंकार को पालने वाला व्यक्ति कभी भी किसी समस्या को शांत नहीं रख सकता क्योंकि वह इन दुर्भावनाओं से स्वयं अशांत रहता है

250- स्वीकृति वा नम्रता की दृष्टि देखने वाले व्यक्ति की नजरों में सब समान होते हैं

251- अहंकार व्यक्ति को रोगी बना देता है

252- स्वकृति व नम्रता का भाव रखने वाला व्यक्ति का समाज में सम्मान की दृष्टिकोण से लोगों के हृदय में उसका कद बड़ा हो जाता है

253- यदि व्यक्ति में ग्रहण करने के प्रति नम्र भावना नहीं है तो उसके द्वारा ग्रहण किया गया कुछ भी उसके ग्रहण का कोई अर्थ नहीं है क्योंकि वह उसके अनुभव से अनभिज्ञ रह जाता है |

254- जब व्यक्ति अपने प्राणों से समझौता कर लेता है तो उसके लिए कोई भी लक्ष्य बड़ा नहीं होता है

255- नम्रता से स्वीकार की गई चुनौती भी विपरीत परिस्थितियों में व्यक्ति के विवेक को डिगा नहीं सकती है

# जीवन परिचय

256- जब व्यक्ति अपने जीवन से समझौता कर लेता है उनके लिए कोई भी संकल्प बड़ा नहीं होता है

257- व्यक्ति में कोई भी भाव उत्पन्न होने से उसकी इच्छा में दवंद उसकी क्रियाकलाप मे उत्सुकता की लहरें पैदा कर देती है

258- जो अपनी कीर्ति के हर्षोल्लास में डूबकर अपना विवेक खो देते हैं वह अस्थिर होते है

259- इच्छाओं की तीव्रता मन में अशुद्ध भावों को पैदा करती है

260- स्वयं से प्रेम करो वह स्वयं को पहचानो

261- जो बातें व्यक्ति की बुद्धि की तर्क में न बैठें वह उसे अर्थहीन समझता है

262- ध्यान का अभ्यास ही मन की शुद्धिकरण का सबसे बड़ा खजाना

263- स्वयं की चेतना में छिपा ज्ञान को जागृत करो एम उसका अनुभव करो एवं उसको अपने आचरण में विकसित करो तभी मुक्ति मिलेगी|

264- पाप मारो पापी नहीं यदि पाप मारोगे तो व्यक्ति की भावनाओं में से पाप समाप्त हो जाएगा तो पापी जन्म लेगा ही नहीं

265- ध्यान के समय जो विचार तुम्हारे मन में या मस्तिष्क में आए जो तुम्हारी एकाग्रता को डिगा रही हो उसे नम्रता से स्वीकार कर अपने प्राण वायु के द्वारा अपने अन्तः चेतना के यज्ञ मे उस की आहुति दे दो

# जीवन परिचय

तुम्हारे मन व मस्तिष्क दोनों में उठ रहे विचारों के दवंद से शांति मिलेगी|

266- अभ्यास ही अनुभव की प्रक्रिया को विकसित करता है

267- यदि व्यक्ति की शब्दों में धैर्य व शालीनता का भाव हो तो शब्दों का प्रभाव कई गुना हो जाता है

268- जब तक व्यक्ति को उसकी योग्यता के अनुसार पद की गरिमा नहीं मिल जाती है उसकी योग्यता ठीक उसी प्रकार सुनी होती है जैसे किसी राजा का सिर राजमुकुट के बिना|

269- ह्रदय में सौंदर्यता व्यक्ति के मुख पर सुन्दर भावों को प्रकट करती है|

270- किसी एक विचार को बार बार सोचने से वह मन से उत्सुकता की बाढ़ ला देती है|

271- नम्रता व त्याग की भावनाओं को पूरे समाज में पनपाओ सारा समाज उसकी गंध से सुगंधित हो उठेगा|

272- व्यक्ति के लक्ष्य प्राप्ति का संकल्प उसके अटल विश्वास पर निर्भर करता है|

273- ब्यक्ति जब तक अपने विवेक से अज्ञानरूपी भ्रांति को नहीं हटाएगा तब तक उसे परम सत्य की प्राप्ति नहीं हो सकती और वह हीन भावनाओ से मुक्त नहीं हो सकता फिर वह चाहे पूजा करें या व्रत|

274- व्यक्ति त्याग व समर्पण की भावना का मूर्ति है यही मनुष्य की वास्तविकता है ना की वासनाओं की

पूर्ति जो व्यक्ति वासनाओं की पूर्ति में लगे रहते हैं ऐसे व्यक्ति वास्तविक रूप से निम्न सोच के होते हैं जो अपने विवेक को नहीं जागते हीन भावनाओं में विश्वास रखते हैं वह काम वासनाओं में लगे रहते हैं और उसे ये अपना जीवन समझते हैं

275- अंतः चेतना का वह प्रकाश जो आपकी बुद्धि की रूढ़िवादिता को हटाकर अपने ज्ञान के प्रकाश के द्वारा उसे हर क्षण में सचेत रखती है उसे विवेक कहते हैं

276- कर्मों की शुद्धता मन के शुद्ध भाव से होता है ना कि सुंदर वस्तुओं से|

277- मन की शुद्धि करण मे ही ईश्वर का वास होता है ना कि पूजा पाठ में|

278- हमारे अच्छे कर्म हमारे ईश्वर है मन की शुद्ध भाव उनकी पूजा एवं दूसरों का मार्गदर्शन ही हमारा सही प्रसार है

279- व्यक्ति की रुचि में ही उसका अच्छा भाग्य होता है इसलिए रुचि के अनुसार क्षेत्र चुनें|

280- भौतिक जीवन में जिसने व्यवहार नहीं जीता उसने कुछ नहीं जीता|

281- आध्यात्मिक जीवन में जिसने मन नहीं जीता उसे कुछ नहीं जीता

282- व्यवहार जीतना व्यक्ति के कुशल नेतृत्व को दर्शाता है|

283- जिस क्षण नया हो उस क्षण जीवन है

# जीवन परिचय

284- जिम्मेदारियां व्यक्ति को गंभीर बना देती है|

285- किसी के प्रश्नों का उत्तर देने से ज्यादा बेहतर किसी के उत्तर को स्वीकृति की भावना से सुनकर उसको समझना होता है

286- मन से दुर्भावनाओं का त्याग शारीरिक बलिदान से कठिन होता है इसलिए व्यक्ति को दूसरे के प्रति अच्छे विचार रखना एवं अच्छे कर्म करना अच्छा नहीं लगता यही मनुष्य के दुख का सबसे बड़ा कारण यही है

287- जिसने संतोष में सुख को ढूंढ लिया हो उसे और किसी सुख की कामना नहीं रह जाती|

288- जिसका मन ही शुद्ध हो और कर्मों में सौंदर्यता हो उसका जीवन ही प्रसाद है|

289- जिसके मन में संतोष का भाव न हो उसके लिए संसार के सारे सुख भी तुच्छ है|

290- यदि धैर्य टूटा तो हार निश्चित है|

291- पद की गरिमा उसको धारण करने में नहीं उसके सदुपयोग में होती है|

292- यदि सुख की कामना करोगे तो दुख भी उसकी परछाई बनकर साथ आएगा इसीलिए परम आनंद व परम सत्य की खोज में  लागों जो स्थायी है|

293- व्यक्ति की एकाग्रता ही उसकी सबसे बड़ी जीत है|

294- समाज व्यक्ति पर तभी तक उँगली उठाता है जब तक उसका समय प्रबल नहीं होता है|

# <u>जीवन परिचय</u>

295- यदि स्वयं से भटके तो समस्याओं में उलझे इसलिए अपना दीपक स्वयं बनो|

296- निर अहंकार का भाव व्यक्ति में श्रद्धा के भाव को जन्म देता है|

297- व्यक्ति का धैर्य व संयम व्यक्ति के अंदर साहस को जन्म देता है|

298- सदुपयोग सद्बुद्धि की निशानी है|

299- माता पिता के द्वारा दिए गए अपने पुत्र व पुत्री को अच्छे संस्कार ही उनके बच्चों के लिए भविष्य में आशीर्वाद व वरदान साबित होता है|

300- त्याग की भावना व्यक्ति को महान बनाती है|

301- यदि आप अपना सम्मान जीवित रखना चाहते हैं तो आपको संयम भी जीवित रखना होगा तभी सम्मान जीवित रहेगा|

302- व्यक्ति का परिस्थितियों से बड़ा गुरु कोई नहीं होता है|

303- किसी कर्म में मिली असफलता का सुधार है प्रयास|

304- किसी कार्य का आरंभिक अर्थ से पूर्व परिणामिक अर्थ आवश्यक है इससे कार्य का परिमापन हो जाता है|

305- यदि भाव मे सम्मान है तो आपके प्रति कहे गए प्रत्येक शब्द समान है|

306- भावनाओ का जनन व्यक्ति के हृदय में उथल पुथल कर देता है|

# जीवन परिचय

307- तृसणाए पूरी हो जाए तब भी दुख रहता है ना पूरी हो तब भी दुख होता है|

308- ईश्वर से निर्मित कोई भी रचना में भेदभाव व्यक्ति को नास्तिक बनाता है|

309- व्यक्ति का धैर्य ही उसकी बुद्धि को नियंत्रित करके किसी भी विपरीत परिस्थितियों में उसका सही मार्गदर्शन करता है|

310- व्यक्ति को आत्मिक आनंद प्राप्त होने के बाद व्यक्ति के हृदय में करुणा का भाव जाग्रत होता है|

311- त्याग की हर वह भावना जो व्यक्ति को निष्काम कर्म की ओर ले जाती है वह व्रत समान है|

312- समय हानि सब हानि|

313- करुणा की सरलता को देखकर समस्याएं भी अपना दम तोड़ देती है|

314- आकर्षण व्यक्ति को कभी सही निर्णय नहीं लेने देता है|

315- वाहृय चिंतन का त्याग ही आंतरिक चेतना की अनुभूति कराती है|

316- आकर्षण व्यक्ति के अंदर ऊँच नीच का भेद भाव पैदा कर देता|

317- इच्छाएं स्वप्न के समान होती है जो पूरी हो जाए तो भी स्वप्न है ना पूरी हो तब भी स्वप्न है|

318- अहंकार ज्ञान पर पड़ी अज्ञान की सबसे बड़ी पट्टी होती है|

# जीवन परिचय

319- यदि व्यक्ति में अहंकार की एक भी किरण शेष है तो वह वास्तविक ज्ञान से अनभिज्ञ रहेगा ज्ञान होते हुए भी उसके बाद सभी का अनुभव से दूर रहेगा|

320- बैराग्य ही ऐसी तलवार है जो जीवन के किसी भी संदर्भ में दूध का दूध तथा पानी का पानी कर सकती है|

321- मन के शुद्धिकरण इससे बड़ा जीवन में कोई यज्ञ नहीं होता है|

322- मन को आत्मिक बुद्धि से बांधकर फिर मन की आँखों से देखे यह सारा संसार शांत व स्थिर दिखेगा|

323- संसार मार्गदर्शन हैं और जीवन एक अनुभव है|

324- आत्मिक अनुभव से शुद्ध ज्ञान विकसित होता है|

325- अस्थिरता ही असफलता का सबसे बड़ा कारण है|

326- व्यक्ति के हृदय में उपस्थित शालीनता व सरलता की भावना के पुंज को करुणा कहते हैं|

327- जिनकी भावनाओं में दान जैसी शालीनता का भाव न हो वह व्यक्ति तुच्छ होता है|

328- स्वयं की चेतना से किया गया अध्ययन ही उच्च कोटि के अनुभव को विकसित करता है

329- ज्ञान का मर्मस्पर्शी आभास ही शुद्ध ज्ञान के अनुभव की अनुभूति कराता है|

330- टूटी हुई आत्मा मेरी टूटा हुआ शरीर टूटी हुई सोच को लेकर कैसे जिए रवीश।

# जीवन परिचय

331- व्यक्ति एवं व्यक्ति का स्वार्थ ---

कुछ व्यक्ति अपने आप को संतुष्टि प्राप्त करने हेतु स्वयं के स्वार्थ को सिद्ध करने हेतु पूजा पाठ करते है क्योंकि उनका मन आकांक्षाओ की आंधी मे रखे हुए उस दीपक के समान होता है जिसे कभी भी बुझ जाने का डर होता है अतः अपनी आकांक्षाओ को सिद्ध करने हेतु वर्तमान मे उठने वाले वह प्रश्न को जो भविष्य के संदर्भ से जुड़ा होता है अपने भविष्य को सुरक्षित रखने हेतु कोई कर्म किया तो उसका उत्तर वही पूजा होती है जो उसने अपने स्वार्थ को सिद्ध करने हेतु की थी उसी पूजा को उस प्रश्न के समझ लाकर खड़ा कर देते है जो उसने भविष्य के संदर्भ मे किया था ऐसे ही व्यक्ति बहुत निम्न सोच के होते है ऐसे ही व्यक्ति जीवन भर स्वार्थी बने रहते है| यदि ईश्वर को प्राप्त करना है तो स्वयं के हृदय मे करुणा व शालीनता का भाव जगाओ आपके हृदय मे ईश्वर का उदभव स्वतः हो जाएगा |

332 - हमारी संस्कृति व संस्कार -----

हमारी संस्कृति हमारे देश का गौरव है फैशन ने हमारी संस्कृति तथा मजाक ने एक दूसरे के प्रति सम्मान को खतम किया है हमारी संस्कृति ने हमे गौरव का प्रतीक बनाया जिसने हमे विश्व का गुरु बनाया | जिस संस्कृति ने पूरे विश्व बंधुत्व तथा एकता एवं भाईचारा की भावनाओ से बाधा आज हम उसी संस्कृति का खंडन कर रहे है

# जीवन परिचय

जिससे विश्व मे बंधुत्व की भावना व एकता व भाईचारा की भावना समाप्त होती दिख रही है |

## प्रार्थना

ओम तुम परमात्म तुम साक्षात तुम सर्वस्व हो , करुणा निधान दयानिधे निराकार व परम सत्य हो |
जीवात्म के अध्यात्म के विकास का स्वरूप हो , तुम ज्ञान वां सम्मान तुम स्वाभिमान का प्रतीक हो |
तुम देव व महादेव तुम काल व महाकाल हो , तुम ही समय का प्रतीक्षण तुम ही संपूर्ण समयादी हो |
तुम ही प्राणी की सच्ची निष्ठा विश्वास व जीवन्त हो , सद्भावना सदप्रज्वलित सददीप व प्रदीप हो |
तुम प्राणी की पवित्र भावना प्राणी का प्राणीत्व हो , मानव की मानवता तुम ही संसार का सर्वस्व हो |
हे परमात्म हे सर्वात्म मुझ जीवात्म का वंदन स्वीकार करो , ओम का जो ध्यान करे वो काम क्रोध लोभ हीन भावना से वंचित रहे |
शुद्ध हो मन उसका व मन आनंदित रहें , जीवात्म के आत्म को विश्वास से दृढ़ करें |
उसे दे सत् बुद्धि बुद्धि को स्थिर करें|

## समाप्त